ओम् शान्ति 1-12-15 अहमदाबाद लोटस हाउस,

## ''बापदादा का यादप्यार - दादी गुल्जार जी द्वारा

(सभी गुल्जार दादी को स्नेह भरी याद भेजते, फोन करते रहते हैं, दादी जी के द्वारा बापदादा ने भी सबको याद दी है)

सभी बहुत प्यार से याद करते हैं। लेकिन बाबा नहीं आता तो गुल्जार कहाँ से आती! बाप कौन है, जिसकी ही आकर्षण है, वह समझना है। वह नहीं आता तो कुछ भी नहीं होता। आकर्षण बाप की है। सभी याद किसको करते हैं? (बाबा को)। कभी कहते हैं गुल्जार कैसे हो या कहेंगे बाबा का रथ कैसे है! ऐसे बाबा के लिए तो नहीं कहेंगे। जैसे और सभी हैं वैसे गुल्जार है। देखा है ना जब बाबा नहीं है तो कैसे हो जाती है। तो यह सारा जो चल रहा है बाबा के कारण चल रहा है। इसे कोई मनुष्य नहीं चला सकते। गुल्जार क्या चला सकती है! यही बात समझना मुश्किल है। साधारण तन है ना, तो उसको देखकर उसमें बुद्धि चली जाती है। लेकिन आयेगा तो कोई मनुष्य तन में ही ना। नहीं तो समझेंगे कैसे! इसलिए बाबा को भी आना पड़ता है। जैसे सभी आते हैं वैसे बाबा भी आता है और जितना समय बाबा होता है उतना समय सब मिलते हैं फिर खत्म। फिर गुल्जार से मिलने तो भले आयेंगे लेकिन थोड़े। वह तो कभी बीमार नहीं होता। है तो उसी का रथ ना लेकिन फर्क कितना पड़ जाता है। इसी राज़ को समझना है और आप चेक करो, खुद देखो, फर्क कितना पड़ता है। तो यह समझने की बातें हैं। अच्छा। अभी क्या करना है!

(ऐसे लगा जैसे 3-4 मिनट के लिए गुप्त रूप में बापदादा आये और दादी *जी* की ही आवाज में यह राज़ स्पष्ट करके गये) अच्छा - सबको याद.... ओम् शान्ति।